



ARYAN RAJ

10 Oct 2012

12:13 PM

Patna

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120282201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 10/10/2012
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 12:13:00 घंटे
इष्ट _____: 16:08:22 घटी
स्थान _____: Patna
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:37:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:23:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:03 घंटे
साम्पातिक काल _____: 13:40:54 घंटे
सूर्योदय _____: 05:45:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:26:21 घंटे
दिनमान _____: 11:40:42 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 23:19:42 कन्या
लग्न के अंश _____: 18:26:56 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: सिद्ध
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डा-डालचंद
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj
Palamu jharkhand (822102)
Call 6201143328, what's app 7061110945
pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1934	आश्विन	18
पंजाबी	संवत : 2069	आश्विन	25
बंगाली	सन् : 1419	आश्विन	24
तमिल	संवत : 2069	पुरुटासी	25
केरल	कोल्लम : 1188	कन्नी	24
नेपाली	संवत : 2069	आश्विन	25
चैत्रादि	संवत : 2069	आश्विन	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2069	भाद्रपद	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 27:09:49
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 13:41:00 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 13:35:14 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 15:08:38 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 59:37:39
भभोग _____ : 63:17:40
भोग्य दशा काल _____ : शनि 1 वर्ष 1 मा 12 दि

घात चक्र

मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

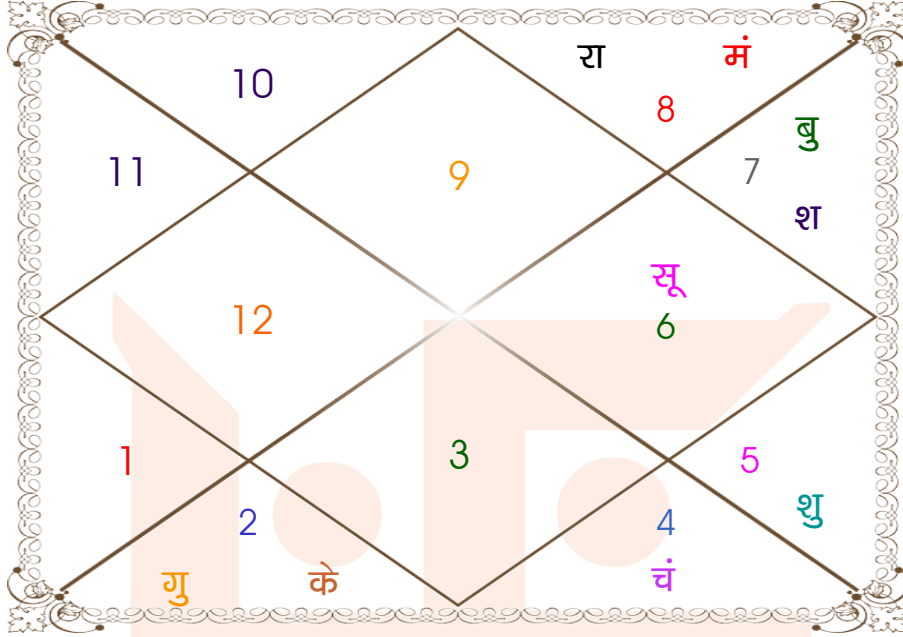
Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

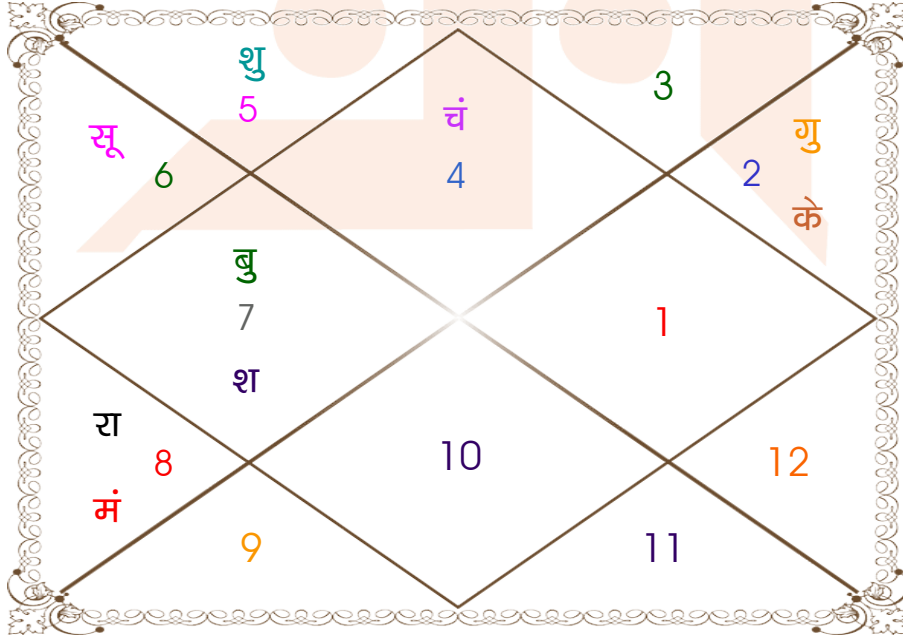
pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		के गु	
			चं
			शु
ल	रा मं	श बु	सू

लग्न कुंडली

के गु		
चं		
शु	बु श	ल मं रा

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 1मा 12दि
शनि

10/10/2012

23/11/2114

शनि	22/11/2013
बुध	22/11/2030
केतु	22/11/2037
शुक्र	22/11/2057
सूर्य	23/11/2063
चन्द्र	22/11/2073
मंगल	22/11/2080
राहु	22/11/2098
गुरु	23/11/2114

योगिनी
धान्या 0वर्ष 2मा 3दि
उल्का

14/12/2021

14/12/2027

उल्का	14/12/2022
सिद्धा	13/02/2024
संकटा	14/06/2025
मंगला	14/08/2025
पिंगला	14/12/2025
धान्या	14/06/2026
भ्रामरी	13/02/2027
भद्रिका	14/12/2027

MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj
Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

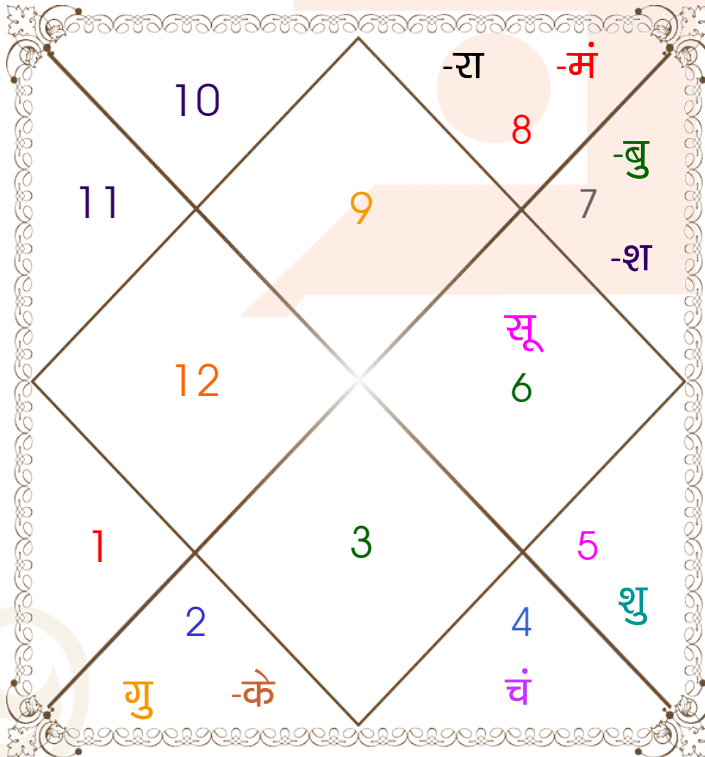
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	18:26:56	351:57:53	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
सूर्य			कन्या	23:19:42	00:59:19	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	सूर्य	सम राशि
चंद्र			कर्क	15:52:57	12:48:59	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	स्वराशि
मंगल			वृश्चि	08:11:14	00:42:40	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	स्वराशि
बुध			तुला	12:59:37	01:25:06	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	बुध	मित्र राशि
गुरु	व		वृष	22:17:13	00:01:09	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	14:08:28	01:10:42	पूर्वाफाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
शनि		अ	तुला	06:29:01	00:07:08	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	उच्च राशि
राहु	व		वृश्चि	02:46:22	00:03:36	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	02:46:22	00:03:36	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	सम राशि
हर्ष	व		मीन	12:04:27	00:02:21	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	---
नेप	व		कुंभ	06:35:45	00:01:00	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	---
प्लूटो			धनु	13:02:27	00:00:41	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
दशम भाव			तुला	03:08:44	--	चित्रा	--	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	--

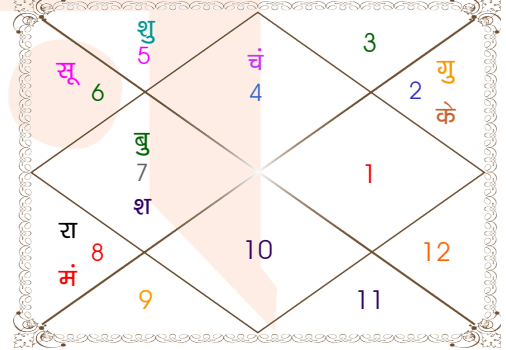
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:22

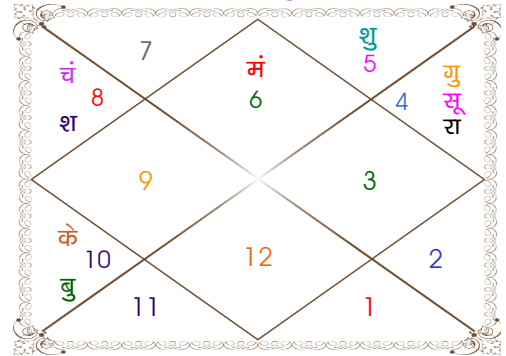
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj
Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 05:53:54	धनु 18:26:56
2	मकर 05:53:54	मकर 23:20:52
3	कुम्भ 10:47:50	कुम्भ 28:14:48
4	मीन 15:41:46	मेष 03:08:44
5	मेष 15:41:46	मेष 28:14:48
6	वृष 10:47:50	वृष 23:20:52
7	मिथुन 05:53:54	मिथुन 18:26:56
8	कर्क 05:53:54	कर्क 23:20:52
9	सिंह 10:47:50	सिंह 28:14:48
10	कन्या 15:41:46	तुला 03:08:44
11	तुला 15:41:46	तुला 28:14:48
12	वृश्चिक 10:47:50	वृश्चिक 23:20:52

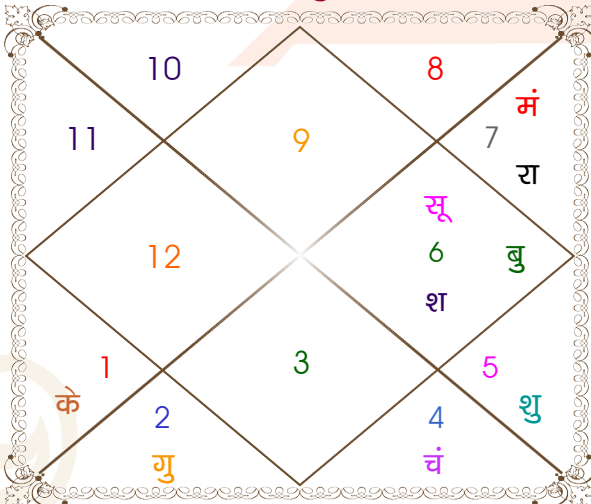
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	18:26:56
2	मकर	23:38:25
3	मीन	00:22:40
4	मेष	03:08:44
5	वृष	00:24:31
6	वृष	24:23:41
7	मिथुन	18:26:56
8	कर्क	23:38:25
9	कन्या	00:22:40
10	तुला	03:08:44
11	वृश्चिक	00:24:31
12	वृश्चिक	24:23:41

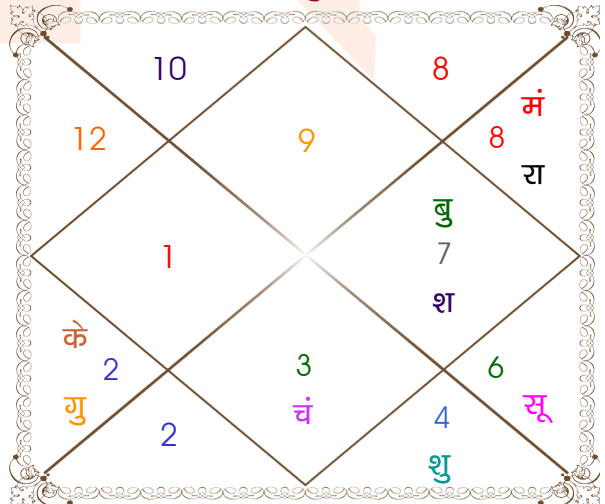
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

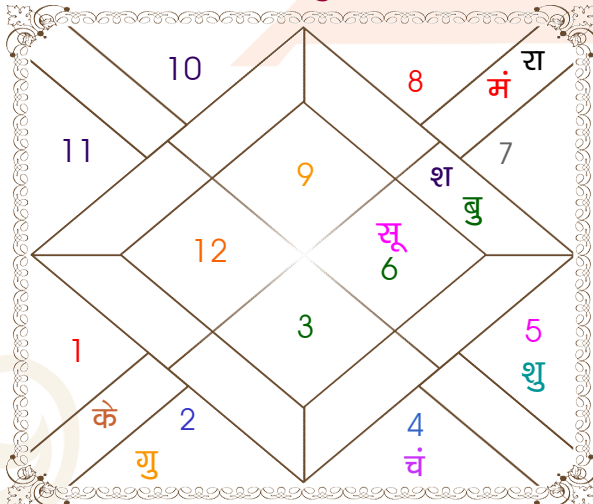
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	कुमार निपीदित प्रकाश 1.11 68 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा स्वस्थ गमन 8.03 33 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	वृद्ध स्वस्थ आगमन 4.17 23 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा मुदित भोजन 5.63 40 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार खल गमन 5.34 21 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा खल नेत्रपाणि 1.90 61 %
शनि	कलत्र	आयु	कुमार विकल शयन 13.87 48 %
राहु	---	ज्ञान	मृत खल गमन 0.00 63 %
केतु	---	मोक्ष	मृत शक्त निद्रा 0.00 63 %
कुल			40.07

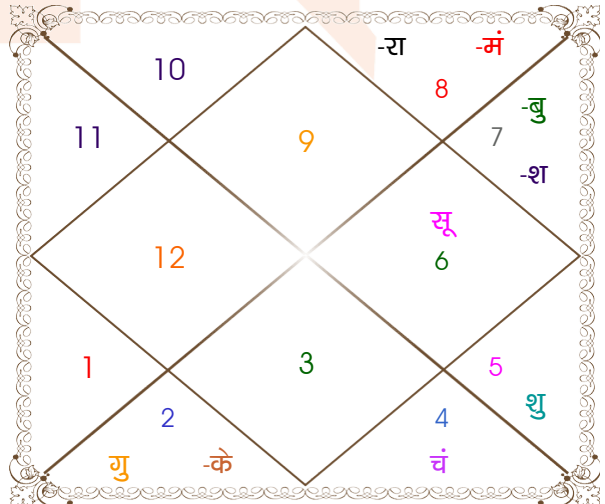
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



लग्न-चलित



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 1 मास 12 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
10/10/2012	22/11/2013	22/11/2030	22/11/2037	22/11/2057
22/11/2013	22/11/2030	22/11/2037	22/11/2057	23/11/2063
00/00/0000	बुध 20/04/2016	केतु 20/04/2031	शुक्र 24/03/2041	सूर्य 12/03/2058
00/00/0000	केतु 17/04/2017	शुक्र 20/06/2032	सूर्य 24/03/2042	चंद्र 10/09/2058
00/00/0000	शुक्र 16/02/2020	सूर्य 25/10/2032	चंद्र 23/11/2043	मंगल 16/01/2059
00/00/0000	सूर्य 22/12/2020	चंद्र 27/05/2033	मंगल 22/01/2045	राहु 11/12/2059
00/00/0000	चंद्र 24/05/2022	मंगल 23/10/2033	राहु 22/01/2048	गुरु 28/09/2060
00/00/0000	मंगल 21/05/2023	राहु 10/11/2034	गुरु 22/09/2050	शनि 10/09/2061
00/00/0000	राहु 07/12/2025	गुरु 17/10/2035	शनि 22/11/2053	बुध 17/07/2062
10/10/2012	गुरु 14/03/2028	शनि 25/11/2036	बुध 22/09/2056	केतु 22/11/2062
गुरु 22/11/2013	शनि 22/11/2030	बुध 22/11/2037	केतु 22/11/2057	शुक्र 23/11/2063

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
23/11/2063	22/11/2073	22/11/2080	22/11/2098	23/11/2114
22/11/2073	22/11/2080	22/11/2098	23/11/2114	11/10/2132
चंद्र 22/09/2064	मंगल 20/04/2074	राहु 05/08/2083	गुरु 11/01/2101	शनि 26/11/2117
मंगल 23/04/2065	राहु 09/05/2075	गुरु 29/12/2085	शनि 25/07/2103	बुध 05/08/2120
राहु 23/10/2066	गुरु 14/04/2076	शनि 04/11/2088	बुध 30/10/2105	केतु 14/09/2121
गुरु 22/02/2068	शनि 23/05/2077	बुध 24/05/2091	केतु 06/10/2106	शुक्र 14/11/2124
शनि 22/09/2069	बुध 21/05/2078	केतु 10/06/2092	शुक्र 06/06/2109	सूर्य 27/10/2125
बुध 22/02/2071	केतु 17/10/2078	शुक्र 11/06/2095	सूर्य 25/03/2110	चंद्र 28/05/2127
केतु 23/09/2071	शुक्र 17/12/2079	सूर्य 05/05/2096	चंद्र 25/07/2111	मंगल 06/07/2128
शुक्र 23/05/2073	सूर्य 23/04/2080	चंद्र 04/11/2097	मंगल 30/06/2112	राहु 13/05/2131
सूर्य 22/11/2073	चंद्र 22/11/2080	मंगल 22/11/2098	राहु 23/11/2114	गुरु 11/10/2132

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 1 वर्ष 1 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु 21/05/2023 07/12/2025	बुध - गुरु 07/12/2025 14/03/2028	बुध - शनि 14/03/2028 22/11/2030	केतु - केतु 22/11/2030 20/04/2031	केतु - शुक्र 20/04/2031 20/06/2032
राहु 08/10/2023 गुरु 09/02/2024 शनि 05/07/2024 बुध 14/11/2024 केतु 08/01/2025 शुक्र 12/06/2025 सूर्य 28/07/2025 चंद्र 14/10/2025 मंगल 07/12/2025	गुरु 28/03/2026 शनि 06/08/2026 बुध 01/12/2026 केतु 18/01/2027 शुक्र 05/06/2027 सूर्य 17/07/2027 चंद्र 24/09/2027 मंगल 11/11/2027 राहु 14/03/2028	शनि 17/08/2028 बुध 03/01/2029 केतु 01/03/2029 शुक्र 12/08/2029 सूर्य 01/10/2029 चंद्र 21/12/2029 मंगल 17/02/2030 राहु 14/07/2030 गुरु 22/11/2030	केतु 01/12/2030 शुक्र 26/12/2030 सूर्य 02/01/2031 चंद्र 15/01/2031 मंगल 23/01/2031 राहु 15/02/2031 गुरु 07/03/2031 शनि 30/03/2031 बुध 20/04/2031	शुक्र 30/06/2031 सूर्य 22/07/2031 चंद्र 26/08/2031 मंगल 20/09/2031 राहु 23/11/2031 गुरु 19/01/2032 शनि 26/03/2032 बुध 26/05/2032 केतु 20/06/2032
केतु - सूर्य 20/06/2032 25/10/2032	केतु - चंद्र 25/10/2032 27/05/2033	केतु - मंगल 27/05/2033 23/10/2033	केतु - राहु 23/10/2033 10/11/2034	केतु - गुरु 10/11/2034 17/10/2035
सूर्य 26/06/2032 चंद्र 07/07/2032 मंगल 14/07/2032 राहु 02/08/2032 गुरु 19/08/2032 शनि 09/09/2032 बुध 27/09/2032 केतु 04/10/2032 शुक्र 25/10/2032	चंद्र 12/11/2032 मंगल 25/11/2032 राहु 27/12/2032 गुरु 24/01/2033 शनि 27/02/2033 बुध 29/03/2033 केतु 10/04/2033 शुक्र 16/05/2033 सूर्य 27/05/2033	मंगल 04/06/2033 राहु 27/06/2033 गुरु 16/07/2033 शनि 09/08/2033 बुध 30/08/2033 केतु 08/09/2033 शुक्र 03/10/2033 सूर्य 10/10/2033 चंद्र 23/10/2033	राहु 19/12/2033 गुरु 08/02/2034 शनि 10/04/2034 बुध 03/06/2034 केतु 26/06/2034 शुक्र 29/08/2034 सूर्य 17/09/2034 चंद्र 19/10/2034 मंगल 10/11/2034	गुरु 26/12/2034 शनि 18/02/2035 बुध 07/04/2035 केतु 27/04/2035 शुक्र 23/06/2035 सूर्य 10/07/2035 चंद्र 07/08/2035 मंगल 27/08/2035 राहु 17/10/2035
केतु - शनि 17/10/2035 25/11/2036	केतु - बुध 25/11/2036 22/11/2037	शुक्र - शुक्र 22/11/2037 24/03/2041	शुक्र - सूर्य 24/03/2041 24/03/2042	शुक्र - चंद्र 24/03/2042 23/11/2043
शनि 20/12/2035 बुध 16/02/2036 केतु 10/03/2036 शुक्र 17/05/2036 सूर्य 06/06/2036 चंद्र 10/07/2036 मंगल 02/08/2036 राहु 02/10/2036 गुरु 25/11/2036	बुध 15/01/2037 केतु 05/02/2037 शुक्र 07/04/2037 सूर्य 25/04/2037 चंद्र 25/05/2037 मंगल 15/06/2037 राहु 08/08/2037 गुरु 26/09/2037 शनि 22/11/2037	शुक्र 13/06/2038 सूर्य 13/08/2038 चंद्र 22/11/2038 मंगल 01/02/2039 राहु 03/08/2039 गुरु 12/01/2040 शनि 23/07/2040 बुध 12/01/2041 केतु 24/03/2041	सूर्य 11/04/2041 चंद्र 11/05/2041 मंगल 02/06/2041 राहु 26/07/2041 गुरु 13/09/2041 शनि 10/11/2041 बुध 01/01/2042 केतु 22/01/2042 शुक्र 24/03/2042	चंद्र 14/05/2042 मंगल 18/06/2042 राहु 17/09/2042 गुरु 08/12/2042 शनि 14/03/2043 बुध 08/06/2043 केतु 14/07/2043 शुक्र 23/10/2043 सूर्य 23/11/2043

MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल 23/11/2043 22/01/2045	शुक्र - राहु 22/01/2045 22/01/2048	शुक्र - गुरु 22/01/2048 22/09/2050	शुक्र - शनि 22/09/2050 22/11/2053	शुक्र - बुध 22/11/2053 22/09/2056
मंगल 17/12/2043	राहु 05/07/2045	गुरु 31/05/2048	शनि 25/03/2051	बुध 18/04/2054
राहु 19/02/2044	गुरु 28/11/2045	शनि 02/11/2048	बुध 04/09/2051	केतु 17/06/2054
गुरु 16/04/2044	शनि 21/05/2046	बुध 20/03/2049	केतु 11/11/2051	शुक्र 07/12/2054
शनि 23/06/2044	बुध 23/10/2046	केतु 15/05/2049	शुक्र 22/05/2052	सूर्य 27/01/2055
बुध 22/08/2044	केतु 26/12/2046	शुक्र 25/10/2049	सूर्य 19/07/2052	चंद्र 24/04/2055
केतु 16/09/2044	शुक्र 26/06/2047	सूर्य 12/12/2049	चंद्र 23/10/2052	मंगल 23/06/2055
शुक्र 26/11/2044	सूर्य 20/08/2047	चंद्र 04/03/2050	मंगल 29/12/2052	राहु 25/11/2055
सूर्य 17/12/2044	चंद्र 20/11/2047	मंगल 29/04/2050	राहु 21/06/2053	गुरु 11/04/2056
चंद्र 22/01/2045	मंगल 22/01/2048	राहु 22/09/2050	गुरु 22/11/2053	शनि 22/09/2056
शुक्र - केतु 22/09/2056 22/11/2057	सूर्य - सूर्य 22/11/2057 12/03/2058	सूर्य - चंद्र 12/03/2058 10/09/2058	सूर्य - मंगल 10/09/2058 16/01/2059	सूर्य - राहु 16/01/2059 11/12/2059
केतु 17/10/2056	सूर्य 28/11/2057	चंद्र 27/03/2058	मंगल 18/09/2058	राहु 06/03/2059
शुक्र 27/12/2056	चंद्र 07/12/2057	मंगल 07/04/2058	राहु 07/10/2058	गुरु 19/04/2059
सूर्य 17/01/2057	मंगल 13/12/2057	राहु 04/05/2058	गुरु 24/10/2058	शनि 10/06/2059
चंद्र 22/02/2057	राहु 30/12/2057	गुरु 28/05/2058	शनि 13/11/2058	बुध 27/07/2059
मंगल 19/03/2057	गुरु 13/01/2058	शनि 26/06/2058	बुध 01/12/2058	केतु 15/08/2059
राहु 21/05/2057	शनि 30/01/2058	बुध 22/07/2058	केतु 09/12/2058	शुक्र 09/10/2059
गुरु 17/07/2057	बुध 15/02/2058	केतु 02/08/2058	शुक्र 30/12/2058	सूर्य 25/10/2059
शनि 23/09/2057	केतु 21/02/2058	शुक्र 01/09/2058	सूर्य 05/01/2059	चंद्र 22/11/2059
बुध 22/11/2057	शुक्र 12/03/2058	सूर्य 10/09/2058	चंद्र 16/01/2059	मंगल 11/12/2059
सूर्य - गुरु 11/12/2059 28/09/2060	सूर्य - शनि 28/09/2060 10/09/2061	सूर्य - बुध 10/09/2061 17/07/2062	सूर्य - केतु 17/07/2062 22/11/2062	सूर्य - शुक्र 22/11/2062 23/11/2063
गुरु 19/01/2060	शनि 22/11/2060	बुध 24/10/2061	केतु 25/07/2062	शुक्र 22/01/2063
शनि 05/03/2060	बुध 10/01/2061	केतु 11/11/2061	शुक्र 15/08/2062	सूर्य 09/02/2063
बुध 15/04/2060	केतु 30/01/2061	शुक्र 02/01/2062	सूर्य 22/08/2062	चंद्र 12/03/2063
केतु 03/05/2060	शुक्र 29/03/2061	सूर्य 17/01/2062	चंद्र 01/09/2062	मंगल 02/04/2063
शुक्र 20/06/2060	सूर्य 16/04/2061	चंद्र 12/02/2062	मंगल 09/09/2062	राहु 27/05/2063
सूर्य 05/07/2060	चंद्र 14/05/2061	मंगल 02/03/2062	राहु 28/09/2062	गुरु 15/07/2063
चंद्र 29/07/2060	मंगल 04/06/2061	राहु 18/04/2062	गुरु 15/10/2062	शनि 11/09/2063
मंगल 15/08/2060	राहु 26/07/2061	गुरु 29/05/2062	शनि 04/11/2062	बुध 01/11/2063
राहु 28/09/2060	गुरु 10/09/2061	शनि 17/07/2062	बुध 22/11/2062	केतु 23/11/2063

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

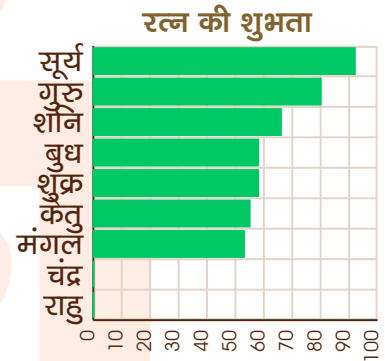
मूलांक	1
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	92%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	80%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, सुख
नीलम	शनि	66%	धनार्जन, धन, पराक्रम
पन्ना	बुध	58%	धनार्जन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	58%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	55%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	53%	कम खर्च, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना
गोमेद	राहु	0%	व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	22/11/2013	80%	0%	31%	64%	80%	64%	78%	6%	34%
बुध	22/11/2030	98%	0%	53%	70%	80%	64%	66%	0%	55%
केतु	22/11/2037	80%	0%	59%	58%	80%	64%	53%	0%	67%
शुक्र	22/11/2057	80%	0%	53%	64%	80%	70%	72%	6%	61%
सूर्य	23/11/2063	100%	0%	59%	58%	86%	41%	53%	0%	34%
चंद्र	22/11/2073	98%	0%	53%	64%	80%	58%	66%	0%	34%
मंगल	22/11/2080	98%	0%	65%	41%	86%	58%	66%	0%	61%
राहु	22/11/2098	80%	0%	31%	58%	80%	64%	72%	19%	34%
गुरु	23/11/2114	98%	0%	59%	41%	92%	41%	66%	0%	55%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होती है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम, पन्ना, हीरा, लहसुनिया एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती व गोमेद रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षेत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को अच्छा रख, आपको निरोगी बनायेगा। आप मधुरभाषी और सदाचारी बनेंगे। रत्न धारण से आप पराक्रमी, विवेकवान और उदार बनेंगे। एवं रत्न शुभता से आप अच्छे कर्म करने वाले, लोकमान्य और प्रतापी बनेंगे। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शत्रुहंता और अजात शत्रु होंगे। यह रत्न आपको वाद-विवाद में भी विजयी करेगा। पुखराज शुभता से भाई-बहनों और मामा सुख मिलेगा। रत्न प्रभाव से आपको अच्छे नौकर चाकर मिलेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए

विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती हैं। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेंगे। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्भीक और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यों के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम ३ रत्ती,

अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध एकादश भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना धारण करना आपके लिए शुभफलदायक रहेगा। पन्ना रत्न प्रभाव से आप ईमानदार और विनम्र स्वभाव के स्वामी बनेंगे। रत्न शुभता से आप अपनी बातों को निभाने का पूरा प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न को धारण करने से आप अपने गुणों के कारण लोकप्रिय होंगे। आप कुछ न कुछ नया जानने का प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न आपको भाग्यशाली और सुखी बनाएगा। रत्न शुभता आपको सेवकों का सुख और उत्तम वाहनों का सुख देगा। यह रत्न आपको शिल्पकला, लेखन या व्यापार के माध्यम से भी धन देगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृत्ति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्ति दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न

दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके आय क्षेत्रों को प्रशस्त करेगा। अपनी उच्चभिलाषाओं को प्राप्त करने के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके शत्रुओं में कमी कर सकता है। शत्रुओं को परास्त करने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके परिश्रम भाव में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋणों पर नियंत्रण रखने में सफल हो सकते हैं। शुक्र रत्न आपको प्रतियोगिताओं में सफलता दिला सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छठे भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप स्वयं को निरोगी बनाए रख सकते हैं। आपके अपने भाईयों से संबंध मधुर रहेंगे। यह रत्न आपको गुणवान और दृढ़ प्रतिज्ञा व्यक्ति बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपको विद्या के कारण यश देगा। रत्न शुभता से आप अपने शत्रुओं को नष्ट करने वाले और विभिन्न विवादों में विजय प्राप्त करेंगे। लहसुनिया रत्न आपको अपने जीवन काल में श्रेष्ठ पद दिलाएगा। ननिहाल से आदर सम्मान प्राप्त होगा।

केतु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृ तज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। आपके लिए मंगल रत्न मूंगा धारण करना शुभ फलदायक रहेगा। मूंगा रत्न धारण कर आप को प्रतियोगिताओं में विजयी बनाएगा। रत्न शुभता से आपके विरोधी आपको परेशान नहीं पर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको हिंसात्मक विचारों से दूर रखेगा। यह रत्न आपके छोटे भाई या बहन को बड़ा पद और प्रतिष्ठा दिला सकता है। मूंगा रत्न आर्थिक स्थिति को स्थिरता प्रदान करेगा। रत्न प्रभाव से आप व्यर्थ के व्ययों पर नियंत्रण बनाए रखेंगे। मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप मंगल रत्न मूंगा धारण करें।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते हैं। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूठी में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड़ सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते हैं। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रान्तियां जन्म ले सकती हैं। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। अनेक योजनाएं आपके मस्तिष्क में निर्मित हो सकती हैं। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते हैं। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यों में अनिष्टता का भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

बुध

(22/11/2013 - 22/11/2030)

बुध की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम, हीरा, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(22/11/2030 - 22/11/2037)

केतु की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा, मूंगा, पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र

(22/11/2037 - 22/11/2057)

शुक्र की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, पन्ना, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(22/11/2057 - 23/11/2063)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र

(23/11/2063 - 22/11/2073)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(22/11/2073 - 22/11/2080)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मूंगा, लहसुनिया व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(22/11/2080 - 22/11/2098)

राहु की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(22/11/2098 - 23/11/2114)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मूंगा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं और मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's aap 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है। टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ॐ वृं बृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और कैले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते हैं। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यों में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते हैं। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठवां भाव अष्टम कहलाता है। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते हैं। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से

पीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते हैं।

मंगल द्वादश भाव में है। पुरुषार्थ से किये गए सभी कार्य आपके सफल हो सकते हैं। आपका स्वभाव कठोर, शंकालु, असत्यभाषी, अल्प धर्मपरायण, शत्रुहन्ता, मामा को कष्ट, बाहर के लोगों द्वारा धन-नाश, वात- पित रोगी, और संतान जन्य चिंता दे सकता है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहन्ता बनेंगे। आप नीच प्रवृत्तियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगति में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते हैं। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/10/2012-02/11/2014	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
सम

क्षेत्र

धनार्जन
पराक्रम
दम्पति
दुर्घटना
बदनामी

MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।

14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's app 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवक्ता, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकार प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत्त रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृत्ति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरुष होंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा जीवन में निहित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगे तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों के पुरुष होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगे तथा अपना अधिकांश समय अनावश्यक वार्तालाप में ही व्यतीत करेंगे। आप इतनी बातूनी प्रकृति के व्यक्ति होंगे कि अन्य लोग आसानी से आप पर काबू नहीं पा सकते हैं। आपका स्वभाव आधुनिक विचारों से युक्त रहेगा तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप किसी को भी अनावश्यक रूप से अपना मित्र नहीं बनाएंगे तथा अत्यंत ही सोच समझकर ही किसी से मित्रता करेंगे जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाएंगे।

आप आंतरिक मन से पारिवारिक जनों की पूर्ण चिंता करेंगे परन्तु प्रत्यक्ष में उपेक्षा के भाव को ही प्रदर्शित करेंगे। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य अनावश्यक मतभेद की भी संभावना रहेगी तथापि उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलता रहेगा तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्न तथा परिश्रमशील रहेंगे। आप विभिन्न स्वादों के प्रिय रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका आस्वादन करते रहेंगे। वृद्धावस्था में आपको नेत्र संबन्धी कष्ट की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप इच्छित मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही विदेश भ्रमण आदि से भी लाभ की संभावना रहेगी। इस प्रकार वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में आप समर्थ रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगे एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध व्यक्ति से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। स्वपरिश्रम, बुद्धिमत्ता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीघ्र लाभ के योग बनते हैं। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपकी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंकों से सफलताएं प्राप्त करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्य क्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रुचिशील होंगे। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रुचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगे। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विद्वान के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगे। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगे। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सद्भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोनों का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेंगे जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चोंको वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है। बृहस्पति के प्रभाव से वह विद्वान् साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यों को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं विनम्र स्वभाव की महिला होंगी तथा सांसारिक कार्यों को करने में दक्ष रहेंगी। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रुचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृत्ति की भी महिला होंगी जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। बृहस्पति के प्रभाव से आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगे तथा महत्वपूर्ण कार्यों में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुःख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। कन्या राशि पृथ्वी तत्व एवं सूर्य अग्नितत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। इसके अतिरिक्त आप एक से अधिक कार्य करने के इच्छुक होंगे।

दशमभाव में कन्या राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र प्रशासकीय सेवा, औषधि विज्ञान, सरकारी कर्मचारी, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत विभाग, कलाकार या चित्रकारी, साहित्य सृजन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है। अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही यत्नपूर्वक अपनी आजीविका क्षेत्र का चयन करना चाहिए। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए कैमिस्ट, ऊनी तथा मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, रत्न संबंधी कार्य, कलात्मक वस्तुओं का कार्य, खेती एवं बागवानी, सरकारी कार्य या ठेके आदि से इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनीति के क्षेत्र में भी आप यथोचित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारी से सहयोग एवं लाभ मिलेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं वस्तुओं का ही व्यापार करना चाहिए।

दशम भाव में सूर्य के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति होगी। साथ ही सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के आप सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी भी हो सकते हैं। इससे आपके प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा समाज में पूर्ण प्रभाव होगा एवं सभी लोग उन्हें वांछित आदर प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका प्रमुख योगदान होगा एवं उनके प्रभाव से इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप भी अपने परिश्रम एवं पराक्रम से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे एवं पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। इसके साथ ही आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि चतुर्थ भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि अष्टम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि सप्तम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए आप अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले जातकों का स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय आप अपने व्यवसाय में अच्छा विस्तार करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करें, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा व साझेदारी में लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। 14 मई के बाद एकादश स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी। आप बचत कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

आपको मित्र या पत्नी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। माता के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। अतः उस समय आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

14 मई के बाद आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। राहु के गोचर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्षारम्भ में गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है, परन्तु मई के बाद आपके बच्चे के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

उस समय उनको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। छोटे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। उस समय आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा, जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्त के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

14 मई के बाद समय बहुत अनुकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में यदि प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपके छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा। 14 मई से गुरुग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपको परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति का अनुभव होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- शनिवार को लोहे का तवा दान करें।



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A College daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call 6201143328, what's aap 7061110945

pt.raviranjjanprabhu108@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी। आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जून के बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैं परन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान के गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चों की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते हैं। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपका सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरों या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।



दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(22/11/2013 - 22/11/2030)**

बुध की अन्तर्दशा 22/11/2013 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 22/11/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध एकादश भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या तथा साझेदारी में बाधा हुई होगी और विरोधी उत्पन्न हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान, स्वस्थ तथा शक्तिशाली होंगे। विषाणुजन्य ज्वर तथा संक्रामक बीमारी, चर्मरोग और स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है। स्वयं को अनावश्यक मानसिक या शारीरिक कष्ट न दें। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश में लाभ होगा। आप दिन ब दिन तरक्की करेंगे और आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा। जीविका और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को प्रतिस्पर्धा में सफलता और उच्चाधिकारियों या सरकार से लाभ मिलेगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और सहकर्मियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, आय में वृद्धि, व्यापार की उत्तम संभावना तथा जीवन में तरक्की होगी। आर्थिक प्रगति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आनन्द और वाहन का सुख मिलेगा। आप गाड़ी की खरीद और विक्री कर सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति का अचानक लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। सामूहिक गतिविधियों से आपको लाभ होगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यापार तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आप सभी बौद्धिक कार्यों में बहुत अच्छा

करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा और वे आपकी खुशी के स्रोत होंगे। आपके जीवन साथी को सहे तथा निवेश में लाभ, अचानक धन की प्राप्ति तथा बच्चों से सुख मिलेगा। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें जमीन-जायदाद और सुख की प्राप्ति होगी। आपको पिता की सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनकी यात्रा होगी और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, सम्पत्ति और पिता से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख, यश और ख्याति मिलेगी और उनकी यात्रा होगी। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपको सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, आपके मित्र प्रभावशाली होंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के कारण आपको लाभ वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा होगी तथा जीवन में प्रगति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और कुछ परिवर्तन होगा। शनि की अन्तर्दशा में कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

**अंतर्दशा :- बुध - राहु
(21/05/2023 - 07/12/2025)**

आपके लिए बुध की महादशा 22/11/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/05/2023 को प्रारंभ होकर 07/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके अप्रत्याशित खर्चे हो सकते हैं। धन की बचत में मुश्किलें आएंगी। कार्यों में निराशा हाथ लग सकती है। नये लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी; उनसे फायदा हो सकता है। विदेश में निवास हो सकता है। व्यापार में संतोषजनक प्रगति होगी। शत्रुओं और विरोधियों पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। नौकरी में वातावरण अच्छा रहेगा। मामा पक्ष के लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी; उनसे फायदा हो सकता है। किराये से अच्छी आमदनी होगी।

आपके जीवनसाथी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, उस से आय अच्छी होगी। माता के पास सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, समाज की भलाई के कार्य, धन का संचय, सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के वातावरण या शिक्षा में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें अचानक लाभ या पदोन्नति संभव है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो संयुक्त उपक्रम से लाभ हो सकता है; आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, आय बढ़ेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। खास तौर पर नेत्रों के रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए रात्रि में दूध से हवन करें।

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(07/12/2025 - 14/03/2028)**

आपके लिए बुध की महादशा 22/11/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 07/12/2025 को प्रारंभ होकर 14/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपको शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। स्पर्धियों पर विजय होगी। अच्छी नौकरी मिलेगी। मातहतों और किरायेदारों से लाभ होगा। कार्यालय उत्तम होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। आपके कार्य से समाज को लाभ होगा। सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। उत्तम वस्त्र, उत्तम भोजन, विलास के साधन उपलब्ध होंगे। धन संचित होगा।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी। आपके पिता सफल और धनी बनेंगे। माता की यात्रा हो सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, धन, परिवर्तन, अचानक धनलाभ और साझेदारी से लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसन्न और भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- बुध - शनि
(14/03/2028 - 22/11/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 22/11/2013 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 14/03/2028 को प्रारंभ होकर 22/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, भूमि और वाहन का सुख भोगेंगे। आप बुद्धिमान हैं। समझ-बूझ से किये निवेश से लाभ होगा। शिक्षा उत्तम होगी, संतान से सुख मिलेगा। सब कार्य पूर्ण होंगे, समाज में प्रभाव बढ़ेगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रोन्नति होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचानक लाभ होगा। वसीयत, उपहार, सेवानिवृत्ति निधि, बोनस आदि से धन आ सकता है। अध्यात्म, धर्म या तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता सफल होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन का लाभ, आत्मविश्वास में वृद्धि, कार्यों की सफलतापूर्वक समाप्ति, जनता में लोकप्रियता का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा, जनता में लोकप्रियता बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दाल, तिल, तेल और काले वस्त्र दान करें।